आत्मकथा 'नागफनी' में अभिव्यक्त दलित संघर्ष

डॉ. रमेश मनोहर लमाणी
At-Post-Siddapur (Shivnagar)
Taluka-Bilagi, Dist- Bagalkot
Pin-587 117, State- Karnataka
Contact No.- 9620376647

रूपनारायण सोनकर हिंदी जगत के लिए जाना पहचाना नाम है। वास्तव में रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा नागफनी केवल एक समाज, एक व्यक्ति की आत्मकथा नहीं है। सभी दलितों एवं समस्त दलित समाज की आत्मकथा है। आज तक जितनी भी दलित आत्मकथाएँ लिखी गयी हैं यह उनसे बिलकुल अलग है। प्रख्यात साहित्यकार व हंस के संपादक राजेंद्र यादव ने सितंबर 2006 के संपादकीय में नागफनी के बारे में लिखा है। "अभी तक जितनी भी दलित आत्मकथाएँ आयी है उनमें हाय मार डाला की चीखें हैं लेकिन 'नागफनी' में हाय मार डाला की चीख नहीं सुनायी पड़ती है, लेकिन नागफनी में संघर्ष है- जिसको अंग्रेजी भाषा में साइलेंट रेन्यूलूशन कहा जाता है।" वास्तव में राजेंद्र यादव की यह टिप्पणी बहुत मायने रखती है और नागफनी को एक क्रांतिकारी कृति प्रतिस्थापित करती है।

आत्मकथा का प्रारंभ नसेनियाँ गाँव में लगनेवाले "ज्वारों का मेला" से होता है। इस मेले की खासियत यह थी कि सिर्फ ताकतवर समाज की स्त्रियाँ जौं के दाने से सजे कलश को अपने सिर पर धारण करके चलती थी जिसके पीछे अन्य स्त्रियों का झुंड चलता था। इस मेले में दलित स्त्रियों को कलश धारण करने का अधिकार नहीं था। तीस वर्ष पूर्व नसेनियाँ गाँव में यही परंपरा कायम थी । लेखक ने तीस वर्ष के बाद गाँव नसेनियाँ में आये परिवर्तन को भी उजागर किया है। तीस वर्षों के पश्चात् जब लेखक की चाची ने अपने सिर पर "जौ दाने के कलश" को सिर पर धारण किया तो ताकतवर वर्ग के लोगों द्वारा उनकी पिटाई की जाती है और उनके उपर समाज के ताकतवर वर्ग के लोग जोर से गरजते है, "ससूरी खटिकिन तेरी यह हिम्मत ! देवी के कलश को अपने सिर पर रखकर भ्रष्ट कर दिया।"[127]

चाची के अपमान को देखकर मेले में मौजूद सभी दलित युवा, बुजुर्ग और औरतें इकट्ठा होने लगे और समाज के ताकतवर वर्ग के लोगों को मुँहतोड जवाब देते हैं और अंत में दलितों ने माँग की, कि "तथाकथित ताकतवर वर्ग के लोग अपने किए पर पश्चाताप करे, और दलित महिलाओं को भी पीतल का कलश सिर पर रखकर चलने दें।"[128] तब उन लोगों ने पश्चाताप करते हुए पीतल का कलश मेरी चाची के सिर पर रखा। समस्त दलित बच्चे जवान बूढ़े और औरतें उछल पड़े ढोल नगाड़े,हुड़क –जोरी, जोर-जोर से बजने लगे। दलित महिलाएँ, लड़कियाँ, जोर-जोर से नाचने लगे थे। सैकड़ों सालों बाद दलित औरतों ने समता का अधिकार पाया था जिसकी खुशी नाच गाने में परिवर्तित हो गयी थी।

दलित स्त्रियों से जुडी दूसरी घटना प्रसंग होली के अवसर पर दिखाई देती है। होलिका दहन पर गाँव के सभी स्त्री पुरुष, बच्चे, इकट्ठे होते हैं। इस मौके पर भी ताकतवर वर्ग के लोगों द्वारा स्त्री को गालियाँ दी जाती है। यह गालियाँ जाति का नाम लेकर दी जाती है जिसके पीछे ताकतवर वर्ग के लोगों का मकसद सिर्फ दलित स्त्रियों को अपमानित करना होता है। लेखक ने अपने गाँव के उदाहरण के माध्यम से इस अपमानित परंपरा का भी मुँहतोड़ जवाब दिया है। संसार के किसी समाज में ऐसी क्रूर प्रथा नहीं जहाँ औरतों को अपमानित करके जश्न मनाया जाता हो। सोनकर जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लड़ाई का जवाब लड़ाई से करते हैं। किंतु अंत मानवता के साथ करते हैं। लेखक यह बात स्थापित करते हैं कि जब तक अन्याय सहते रहेंगे तब तक दलितों की यही स्थिति कायम रहेगी। लेकिन जब अन्याय का प्रतिरोध किया जायेगा तो यह परंपरा समाप्त होगी। लेखक दलित एकता की बात कर रहा है।नागफनी में एक और दारुण प्रसंग हैं-'हरिशंकर का बंधक भदइया चमार यह प्रसंग दिल को उद्वेलित करता है। भदैइया चमार का बस इतना ही कसूर था कि उसने बेगार करने पर भी पैसे नहीं दिया था। जिसके कारण उसने हरिशंकर और उनके उच्च वर्ग के साथी भदया चमार की इतनी बेरहमी से पिटाई करते हैं कि जुल्म की सारी हदें पार कर जाते हैं। ऐसे जुल्म समाज में उच्च वर्गों द्वारा सदियों से दलितों पर बरपाये जा रहे हैं। आप दलित भाइयों पर अंग्रेजों से भी ज्यादा अत्याचार कर रहे हैं। जब अंग्रेज भारतियों पर इसी तरह के जुल्म करते थे।चाहे जिस जाति पर अत्याचार होता था-तो सभा जातियों के लोग अंग्रोजों का सामना करते थे।"[130]"नीच कहीं के हमें अंग्रेज बना रहा है तो देख जो अत्याचार अंग्रेजों ने भारतियों के साथ किया था, हम उससे ज्यादा अत्याचार तुम लोगों के साथ करके दिखायेंगे। सारे दलित अंग्रेजों के द्वारा किये गये अत्याचारों को भूल जायेंगे । हमारे अत्याचार याद रखेंगे।"[131] इससे कैसे मुक्ति पा सकते है इसका जवाब नागफनी में सोनकर की लेखनी द्वारा स्पष्ट हुआ है।

नागफनी में ऐसी कई घटना प्रसंग है जो दिल को गहराई तक उद्वेलित करती है। एक प्रसंग ऐसा है जिसमें समाज के अगुआ वर्ग के व्यवहार से ग्लानी होने लगती है। इलाहबाद विश्वविद्यालय की एम.ए उपाधि रो पड़ी लेखक का छोटा भाई अजय इलाहबाद विश्वविद्यालय से एम.ए पास करने के बाद आई.ए.एस. की परीक्षा देकर गाँव आता है। हरिशंकर उससे जबरन ताकत के बल पर गोबर और कंडे दुलवाता है। अजय के इनकार करने पर गाँव के दबंग ने हरिशंकर की शह पर अजय को पकड़ लिया। हरिशंकर गाली देते हुए बोला "साले ! अगर एम.ए. पढ़ गया है तो इसका मतलब यह नहीं है कि तू हमसे बड़ा हो गया है। हमारी बात को काट दे। जिस भी चमार , कोरी, खटिक, भंगी पासी ने हमारी बात काटी उसकी खैर नहीं। अभी हम लोग तुझे समझा रहे हैं। बात हमारी मान ले।"[132] अजय ने कहा "मैं इलाहबाद विश्वविद्यालय से एम.ए पास करके आई.ए.एस. की परीक्षा देकर आया हूँ। मैं ने बाबा साहेब डॉ.अंबेडकर का संविधान पढ़ा है। संविधान के अनुसार किसी आदमी से जबरदस्ती कंडे/गोबर उठवाना अपराध है। आप मुझ से ताकत के बल पर बेगार नहीं करवा सकते हैं।"[133]वास्तव में यह अपमान लेखक के छोटे भाई का अपमान नहीं था बल्कि एक विश्व के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय से प्रदान की गयी डिग्री का अपमान था, लेकिन डिग्री में ऐसी ताकत है जो अत्याचारियों को परास्त करने अदम्य साहस रखती है।

वास्तव में इस तरह की घटनाएँ हमारे देश के गरिमा पर कलंक हैं जो दलितों,निर्बलों,असहायों पर होते रहते हैं। दलितों की शिक्षा,और उन्नति उनको चुभती है। वे लोग उच्च शिक्षित दलितों को जोर जबर्दस्ती से बंधुआ मजदूर बनाकर रखना चाहते हैं। अनपढ़ और

दलितों के सामने उच्च शिक्षित दलित कुछ भी नहीं है, यह अपमान दलितों में फोड़ा बन जाता है। जिसमें मवाद भर जाता है। फोड़े से मवाद को निकाले बगैर दलितों को राहत नहीं मिलती है। नागफनी में फोड़ा फूटता है मवाद बाहर निकलती है दलितों को राहत मिलती है। नागफनी की यही विशिष्ठता है। इसी कारण नागफनी में एक चुंबकीय आकर्षण है। नागफनी द्वारा दलित समाज में चेतना पैदा होती है।

दलित साहित्य के सौंदर्य को लेकर भी बहुत विवाद आलोचकों में छिड़ा है। इस आलोचना का जवाब भी सोनकर जी ने नागफनी लिखकर दे दिया है। सोनकर द्वारा प्रयुक्त भाषा,प्रतीक, बिंब, उपमाएँ अपने आप में बेजोड़ हैं। दलित साहित्य के सौंदर्य शास्त्र के मिथ को भी यह आत्मकथा तोड़ती है। सुअर दान उपन्यास का युद्ध वास्तव में प्रतीक बनकर आय है। यह प्रतीक कमजोर और ताकतवर के बीच नजर आता है। **जानवरों** के युद्ध के माध्यम से लेखक ने व्यक्तियों के युद्ध को उजागर किया है। सदियों से जिस छल,फरेब का सहारा ताकतवर अपनाते रहे हैं वहीं छल फरेब जानवरों के युद्ध में भी दिखायी देता है। प्रतीकात्मकता अनूठी है जिसे गढ़ने में उन्हें सफलता हासिल हुई है। काली रात बीत चुकी थी। चिड़िया चहचहाने लगी थी। असमान में लालिमा छायी हुई थी। सूरज उग रहा था।"[134] जैसी भाषा प्रयुक्त करके लेखक ने दलितों में आयी चेतना को बखूबी प्रकट किया है। ऐस काव्यात्मक भाषा का प्रयोग नागफनी में कई स्थलों पर हुआ है। तमाम ऐसे कहावतें दलित साहित्य में प्रयुक्त होती रही है। इसका जवाब भी सोनकर जी ने नागफनी में दिया है। यह लेखक की भाषा का ही कमाल है कि वे चुभती बात भी संयमित ढंग से करते हैं।

नागफनी शीर्षक भी प्रतीकात्मकता लिये हुए हैं। नागफनी का काँटे नुकीले होते हैं इन काँटों की विशेषता होती है कि ये कभी भी सूखते नहीं है। शरीर में लगने पर भी हरे रहते हैं। शरीर में प्रवेश करने पर बहुत पीड़ी देते हैं। उसी प्रकार जैसे जातिवाद असमानता, आर्थिक पाखंड, अंधविश्वास नुकीले काँटे हैं, जो भारतीय समाज को पीड़ा पहुँचाते हैं। इन सबसे छुटकारा तेज ज्ञान रूपी औजारों से हो सकता है और यह तेज औजार सोनकर जी की कलम है। यह कलम तलवार से भी ज्यादा पैनी धारधार है जो अमानवीय व्यवहार करनेवालों को अपनी भाषा की शक्ति से ध्वस्त कर देती है। जिस प्रकार नागफनी के काँटा को निकाले बिना चैन नहीं पड़ता उसी प्रकार जब तक समाज से समरसता का अभाव और गैर बराबरी है तब तक एक सर्वजन समाज का निर्माण नहीं हो सकेगा। लेखक नागफनी शीर्षक के माध्यम से यही बात कह रहा है।

नागफनी दलित समाज को अंधविश्वास,पाखंडता से बाहर निकालने में एक बहुत ही क्रांतिकारी भूमिका अदा करने जा रही है। सदियों से पीड़ित समाज अज्ञानता के कारण डरा हुआ है। एक प्रसंग में लेखक से शिवभजन जबरन अपने मंदिर की पुताई करवाता है। लेखक अपनी जान की परवाह न करते हुए रस्सी से लटककर मंदिर के ऊपरी भाग की सफाई व पुताई कर देता है। अपने मित्रों के अनुरोध पर अखंड पाठ में भाग लेता है। शिवभजन लेखक को अखंड पाठ में बैठा देखकर आग बबूला हो जाता है। " इस अछूत को रामचरितमास की चौपाई पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है, यह अखंड पाठ खंडित हो जायेगा।"[135]और लेखक को वहाँ से अपमानित करके भगा देता है।

****

निलज वनिता का सांस्कृतिक भौतिकवाद

अमर सिंह (शोधार्थी)
डॉ. सीमा चन्द्रन (शोध-निर्देशक)

सहायक आचार्य
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय
तेजस्विनी हिल्स, कासरगोड-671325
seemachandran@cukerala.ac.in
Mob-9447720229

प्रस्तावना-क्या संसार भर में जितने भी मानवीय, वातावर्णीय, मानवभौतिकीय क्रियाकलाप हो रहे या किए-कराए जा रहे हैं जिनमें अपराध, अनीति, कुकर्म, दुराचार, अहं, अविधिता आदि सम्मिलित हैं क्या वे सब परिष्कृत, परिशुद्ध और नियमावृत हैं? यदि हाँ तो ठीक है। यदि न, तो आप ये मानिये कि जब ये सभी मानवीय कृतिकताएँ परिष्कृत नहीं हैं, तब भला उन्हें शुद्ध परिष्कृत भाषा व पाठ-दार्शनिकीय वातावरण में कैसे अभिव्यक्त व संप्रेषित किया जा सकता है? संसार में अब तक जब से हम सचेत हुए हैं तब से हम से अधिक सचेत लोगों ने मानवीयता को समाज के बड़े ठेकेदारों ने चाहे वे सनातनवादी हों, बुद्धवादी हों चाहे मुगल, सामंत, उपनिवेशी आदि हों, सभी ने समाज को कई नई और अविश्वानीय तथा बलपूर्वक नई अविधिक दशाएँ और दिशाएँ दीं हैं। यह मात्र कुछ धन और यश प्राप्ति के लिए अधिक से अधिक हुआ है। इतिहास को तो परिष्कृत करा कर नवीन रूप दे दिया गया। लेकिन आज सामयिक सामाजिक बोधपरक युग ने इतिहास-परिष्कृतिकरणीयता को धर दबोचा और इस हर बात को हर विषय को एक शंका की दृष्टि से देखने की परिकल्पना ने वास्तविकताओं को बाहर फेंकने का काम प्रारम्भ कर दिया।

प्रस्तुत सुलभ सांसारिक हाव-भाव और रंगबाजी सबसे अधिक साहित्य में देखने को मिलती है। हालाँकि ऐसा नहीं है कि अन्य विषयानुशासनों में यह सब नहीं देखने में आता। यह सारे मानव-प्राणी विषयों में देखने में आता है। साथ ही वह चाहे किसी पत्र, पात्र के द्वारा हो अथवा किसी समाज, साहित्य आलोचक के मुखारविंद व लेखन से या के द्वारा। इसका मुख्य कारण खासा साहित्य और सामाजिकी में आई नवीन आलोचना सिद्धांतकियाँ हैं। सिद्धांतिकियाँ चाहे वह मार्क्सवादी हो, चाहे विखंडनवादी हो, नव्य इतिहासवादी हो, चाहे सांस्कृतिक भौतिकवादी हो और चाहे सांस्कृतिक साहित्य ही हो। इन सारी सिद्धांतकियों ने अपने-अपने रूप में एक ही समान बात के भिन्न-भिन्न अर्थचित्रव्याकरण और मान्यताएँ देने प्रारम्भ किए हैं। जैसा कि होना भी चाहिए था। इसी रूप में एक विषय जो आज गंभीर समस्या बनता जा रहा है। वह है - स्त्री विमर्श। यदि इस विमर्श को सांस्कृतिक भौतिकवादी सिद्धांतिकी से खोलकर देखा जाय तो? जैसा सांस्कृतिक भौतिकवाद के बारे में सुधीश पचौरी ने कहा है कि *"हर सांस्कृतिक 'कृति' (टेक्स्ट) का ऐतिहासिक संदर्भ होता है। इस तरह हर कृति खास परिस्थिति की पैदाइश होती है। इतना ही नहीं, हर कृति का एक कृतिगत इतिहास होता है। जिनसे उसकी कृतीयता या पाठीयता बनती है। इसके अलावा हर कृति के कृतिगत इतिहास और उसके इतिहास के 'पाठीयकरण' को देखना समझना होता है और इस तरह कृति को अनुशासनों के आर-पार जाकर उसके उन विमर्शों को पढ़ना होता है जो कृति से गुज़र कर जाते हैं। इसीलिए सांस्कृतिक भौतिकतावादी अध्ययन के लिए यह ज़रूरी है कि वह कृति में सक्रिय 'सत्ता' के प्रश्नों पर ध्यान*